

ASUA ARCHIVES

2870

ॐ ॥ नमामि १ वागीश्वर सयत्रम निद्वयया १ विलासि विशू जगत्त्रमनादय
सयत्र जिनद्वयया ॥ ॥ पीकनीवात्र ललीतवयन १ पंचजिनमकूटमनिलय
ना ॥ ॥ धर्मचक्रमूलाकूटि १ सि १ यथावापयिष ह्यरुतकाना ॥ ॥
सनासूत्रनमिगत्रवत्त १ रुतगिपत्रमादि वज्र १ न गुललयन ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

त्रवि॥ मायामयं हामनि कनक वाजिनपुष्पादिदहज्जम्बूदीपाश्चपत्रग
मयानि दहज्जम्बूदीपाश्चपत्रगमयानि पंचवर्षपञ्च जिनव्यापि यात्र॥ ॐ ॥ नमो पंचवर्ष
विश्वसृजिन विश्वदिन विश्वरुग पञ्चसूत्र नि २ अक्षदिपात्रवद्वर्गिजिनमा
नसा हयकुसुममिषयनघात्रवृषं॥ ॥ जातवदन्यम यादजदिपं
वाडपदिपविजाकुशान १२ स्वमनवाडपदीप वडविदिगरुवन वाडपदीप
शीखरुपत्रयु॥ ॥ दिवदवत्र पात्रियनववृधित्रयात्रियसफ

अक्षादत्र च विद्या यत्र अत्र यत्रा ड दिचिय सायकं च का मति कूल निधि निशि
लवद यति ॥ ॥ गुर्वच यत्रा किव यत्रा गति पत्रि गा वता मन क म म

ददकयप्रिसंप्रियूजा १ पदविप्रिहात्रप्रिसफप्रवियूप्रिमा गवकुलनि
प्रिसंगवदा मरुहगं ॥ ॥ २०६ ॥ ॥ १ वागरेववि ॥ निर्मानादि च

दुष्पट्टिदत्रमत्रावद माध्वगणनादिष्टगनादद्रूषी १ समीवप्रविक्तलाहिगाह
गातिनिनवन्निग्रस गापन्नश्चन्द्ररूपी ॥ ध्रुवा ॥ इन्द्रमाप्तिदत्री श्रीवकाविशामि

नीतिप्रदसुखद विलासममस्नान कृती १ सदिद्यानपूर्वुगि वि कामद्रूपगीद

॥ ३३ ॥ वेदेषु धर्मेषु निश्चयः ॥

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

॥ ३३ ॥

त्वागंगम्भारुचवी ॥ एगकृदहनपंचरुद्रस्वरूप १ पंचामियत्रम. पञ्चभविपूजिया
 ॥ ६ ॥ उमादेवीवलिलाय. जिरुवनवीत्रा १ वीत्रमवायक. समया आन
 न्या ॥ ॥ वीत्रवीत्रवत्रयद्रुजा आनन्द १ कलंकमलासनद्वयया आन
 न्या ॥ ॥ पञ्चवृक्षपञ्चरुद्रस्वरूप १ देवा असुवनत्रयमूदिगहन
 दया ॥ ॥ ॐ आः ह्रीं कीर्त्तयेत् ॥ धनकविग १ उमवृक्ष १ धनि. वित्र
 मा आनन्द ॥ ॥ ॐ ॥ १ बागकनठि ॥ षट् आशिनी देवी. जिरु
 वनवादिनी १ विषमाय इह दण्डनिनामिनी ॥ ६ ॥ नमामि १ देवी गीः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ पृष्ठद्वयगतं यक्षव

॥ वायूय भाहिनी दवी, श्री

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ चतुर्हज न

卷之四

(K)

卯

॥ खखं, खादि१ वलिपूवल्, घघ घादय १

प्रतिपद

विष्णुत्रयपञ्चमियात्रमपञ्चमात्रिपञ्चमज्ञानमवविना॥

॥ सर्वयज्ञा

क्रमरूपपुनर्मिमात्रात्मादापत्मात्र॥ अकजकिनीइयि

अहमममात्रं कर्मम

लिङ्गद्रुणुपीवदुत्र॥

॥ दानपतिमर्षकार्यतत्त्वया सर्वसुखसंपत्तिवृद्धि

त्र॥ आसंसात्रागकवयत्र सर्वसुखसंपत्ति॥ कित्र॥

॥ समयत्रकै

दानपतित्र सर्वसिद्धिसंपद॥ कित्र॥ अथेवगथेव सुंअथपीवथ जिह्वथमारुकमथ

त्र॥ ॥ ॐ ॥ त्राम् पदमं ॐ नि ॥ अनिलअनलजलआरुवमाभ्य

मन्त्रं ॐ नचकवाया ॥ वरुपंजलमवजालसंपत्तिरुविभवमंजलचक्राया

ॐ ॥ उमन् कृत्वा ॐ या ॥ मन्त्राकाराणि आलिङ्गता दत्त्वा ॐ या ॥ वज्रवाचादि
आलिङ्गता समन्त्र कृत्वा ॐ या ॥ ॥ इति संविद्य वीर्यवत् स ऊर्द्धादि ऊर्द्धादि गहिग
हि अष्टाशमशम १ अन्नरुग्म सर्वदत्त वज्रपाश दवी मिलितिय गयन संदा
वा ॥ ॥ शिरूवन रुक्म ए कलायन रात्रा ॥ शिरूवन रुक्म ए कवीववी
वा १ मितिरूवन नवना ८ सं प्रसा विप्र रुलिं एगव एका कात्रा ॥ ॥
अहिनिमिगता गुप्ता वात्र न रुत्रा १ ग कादि १ गलराव अराव १ उन्म सत्रा १ रा
यवन्वन कादि १ गलराय मात्र अग्निय संदावा ॥ ॥ ॐ ॥

नकावक

१ नागनाट ॥ नकावक ॥ तिनि वा यन सत्यदी २ अक्षदशरुजं पदवलीकिवली
॥ उक्तदवीवावलिमहासामकिदवी २ अगतपमादित्रमयनसत्राः
गा ॥ ॥ आगमत्रदपूनालवखान २ आगधत्रमदिदा गुव ६ पदला
॥ ॥ पंचवक्त्रस्वरूपअरुक्त २ सयात्रआगिनीमाभ्यरुवडा उद्वडा
॥ ॥ शकगुवचत्रलसिचंगनधवीया २ रुनयिपीवाकूवडा सत्रास्वरु
पी ॥ ॥ ॐ ॥ १ नागरुववा ॥ नमाहुं अकावलीरूपधनु २ खक्तवि
सत्रदमाधनु ॥ ॥ ॐ ॥ १ नागरुं १ नागरुं १ नागरुं १ नागरुं १ नागरुं ॥

नकावक

ना॥ ॥ वज्रघट गज चर्म उमचूखपांग विनमा आनन्द मव निधना
 २ कत्रनिक पाल पत्रशु पात किशू लवका मित्र धरा व्याघ्र चर्म कति वस्त्रिगा॥
 ॥ दिगा विदिग काका रक्षादि उमदा किनी दवी सहजा आनन्द मव
 मिधवा २ नमामि २ श्री चक्र सम्वरा मगगुच वली आवाधिगा॥
 ॥ १ वाग अरुति ॥ रुउ आरुत ली कियायि य सम्वर धनयिक वावि
 प्रवासा २ उक्त वावरा मलि यामसा न सकुट कक्षा दिगम्वरा॥ ७३ ॥

प्रमात्र सम्वत्तया समवसुन्दरी भाव कात्रा १२ मविवाहित्र व
जवात्रादि रु उ मदित्र भाव सादा ॥ ॥ अत्रिगायन वदमहमयन
कर्षवखयिगं वात्रा १ गगलनित्रा वरु वदित्र आदा मत्रमकुलरुवत्रिना
॥ ॥ डियं ध उषा ग ह्वादि गत्र सम्वत्त पयिप्रयिगुन्यरगात्रा १२
मविवाहिनी वजवात्रादि रुक्ता विरुदष मिर्जुंधात्रा ॥ ॥ गावन्ति
लीलावज आत्रियावूत्र गगगुवूत्रवद आत्रा ध १२ मया आनन्द रुवि

क
७
३

एगत्रमल, सम्वत्रवजवात्रादि ॥

॥ ॐ ॥ १ वागकनदि ॥

मिहंदाचापयिथागिनीदरुकवादि १ कमलकुलिगघृकलकूनवि
यात्र ॥ ॥ आगिनीकुम्बविष्खनकूनजीवयि २ गात्रामूह

चंवि यात्र, कमलसंप्रीवयि ॥

॥ रूपकूयागिनीत्रपनआयि

१ मलिकूलवहियात्र, उदियानसमायि ॥

॥ सासुहस्यत्र

यात्र, कात्रियगात्र १ वन्दसूर्यदयिपकूनरुवाआ ॥

॥ र

वि.
अ.
वि

नयि गुणुत्री रुम कूंदू वी वा १ नयय ना वि मा भ्य डरुय ड वि वा ॥ ह
॥ ॐ ॥ १ वा ग ग न्ध व र वि ॥ वि वि ह वि ह न न मा व वि ग मि
व द ना १ द वान न व अ सू व ग ल रू व न ह रु क व ल ॥ ५ ॥ ना च व
न मा मि शी स म व वी वा १ व ज आ गि नी व नि व स ह ज ग न्ध वा ॥ ६
॥ व ज वा वा दि आ लि ग ल क ॥ ७ १ ह रि र्म वी य स्व व स म व स वी वा ॥
॥ वा गा हू द ह न वि मू मा स सु र ह र्म १ क व ल व ल ग न ला य

(१२)

उत्तिगा

नरिष्यत् ॥

॥ द्वादशरुज धाविचाविचडवदना १ निवः

सहाव गगलकुशलिना ॥

॥ १ वागविनास ॥ उदिगागवलेया

प्रवतप्रधूना १ वतंसददामककासमलिना ॥

ध

॥ द्वात्रिंशद्व

रुवाचिर्मगत्रिना १ अखयनिर्जर्जन मादृशना ॥

॥ दिनकव

मउलमध्वगगा १ कवृणमृगवस एवकृणा ॥

॥ दग्ध आ

निरुवपकिनिदन्ता १ देवा अ सुवनच गिचं नमिगा ॥

॥

ॐ नमो

नमो वक्रिपवनपविशुचूरुगता १ वज्रवात्रादि उडुगिनीनमिता ॥
॥ ॐ ॥ १ वाग मधुमग ॥ जय वाक्कलि रुचूवद्यवयि
१ सयत्रसु वासुत्रज गगडध्ववली ॥ ॥ १ रुगवगिपाइ काः
मनमहिमगुल श्रीपुलवली मनकात्रा १ हाउ आरुत्रल विरुषिग
मंखव घुड डलाला गिनितिनिति गिनयनी गिनितयना ॥
कात्रगिषर्षत्र गीधवदनवमित्रमात्रा १ कखिखव धीगवत्रमकुडकभा

ॐ विष्णवे नमः

॥ शिवसिंधुः, कंजसुहृन्वा १ कच्छुविकर्पवतं वावसखसावी
॥ रुतयिप्रवगवः, वाक्कविदासा १ श्रीवज्रदवीपसादा, श्री
हृन्वपाया ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ २ बागकाभाद ॥ कं विजसंरुव, ख
समददा नववसदा शिं गालकलधवा १ द्वादशरुजा, वदवदना, द्वाद
शवर्गव, वकनर्ग ॥ ॐ ॥ नमामि श्रीगिरिकं ध्वनं १ मात्ररुय, रु
वरुयद्वली ॥ ॥ चतुर्विंशति पी ॥ ० ध्वनं ॥ कृतिर्नवीनवीयध्व
वी १ चतुचक्रपदक्षिणि, प्रविष्टगा, दवीसंपूग, पदलिगक्षिणा ॥

अवनिनिदिन जा न

पद्मसंपूर्ण आलिकालि पदाकांक्षा अगिस्तन्यत्राश्वा दमदवी न
कलावा नमामि श्रीचक्रसम्बन्धना ॥ ॥ गगनगुप्तचक्राणि मित्रांगधा
र्यो रत्नयिर्मगीत श्रीकूलिम्भ १ दानपतित्र सनादुर्ध्व सद्यमस्तुल आ
वा धिता ॥ ॥ ॐ ॥ १ वाग काभाद ॥ अवनिनिदिन जा
नू नील समदला १ क कल चित्तयन शेषम वदना ॥ ॥ ग ना
कूंकूंग ना कूंकूंकू जाग अचल का धवाया ॥ ॥ निविदिन घन द (क)
मि ॥ अरिग संग १ पाशखञ्ज क्षत्री गिरुवनना था ॥ ॥ हवि

शुक्लनिनिदिनको

हृन् वक्रां न्य च डमा ला १ मात्र विद्युत्प्रगिष्ठा रु गयद वल्ल ॥

॥ विविधिवत्तमो विप्रं कृतं दत्ता १ उगग वांक्किग वल्ल रु लदा यकं ॥

॥ ॐ ॥ १ वाग का भा दं ॥ अवनिति निदिन वास जान् एव ॥

कि वल्ल मात्र संगा १ वाग दष भा रु वधिव पा १ ॥ पिउवन वाया ॥

च व वी वा ॥ ६ ॥ न मा मि शी व उ म हा वा म ल ॥ जा ग म ल्फ

॥ स रु दिना १ विश्व नाथ, विश्व व्यापित वी व वि काम म हा का ध वा या ॥

॥ मा मि शी म ना ग ॥ ७ ॥ प र ॥ ८ ॥ क लाल, विद्युति कि वल्ल १ पी

कावसंज्ञा

॥ सावाखरुसप्रल ॥ ॥
॥ वायापुनन्दप्रवक्ता वीदप्रिमाचा पादरुवला १ समवसमाया ॥
॥ विमाहा ह्माग वायसमाहि न दहा ॥ ॥ वल्लारवला पका ॥
॥ लिगमोत्री कयुव नोप वनूर्धमनकावा १ मवनवनाथ वन्दिन चवला ॥
॥ वायसुवधव अचवतीवा ॥ ॥ ॐ ॥ रागह अत्र वा ॥
॥ कावमंजात ॐ नुनीवसमदृति दहा १ पाकाला कलनसमदृति काला कलन
समाकला ॥ ॥ ॐ ॥ अयं तु अवल अनग मन्त्रि ख ॥ पाठा कवधा वि ॥

ऊगकनाथऊगकपालिक, मरुकाधवाया ॥

॥ अवनित्तिदिगवाम

आन, धाववदन शिलाचवा १ कंकसादर वरयंकव अखिलविष्णुका

॥ ॥ अक्रुविद्वममयमायादर्पादसनसुवीवा १ दङ्गानिष्पीडि

गधन मय किप्रदीप प्ररुका ॥

॥ विविधिवत्ना आरवणविरह

षिक दिवावत्नसु मोदी १ ऊगकवांद्धि क सर्वसंपत्ति सिद्धिरुलदायक

॥ ॐ ॥

॥ १ वाग, स्वर्ग ॥ वासवर्षत्र, दहिन कत्रनि १ पाय

नोपूत्रवृक्षमात्रद्विगा ॥

४३

॥ दवीनात्रेवकजटिवज्ज

गिना १ शिनिनं दवी शिरुवनपयिमा ॥

॥ कालमृत्पदयि

पागनवधिगा १ यागद्वषमाहकवगिन कृदिगा ॥

॥ श्रव

मृक्षदवी निवज्जदवी १ मृत्पाणदवी मृत्पदवा ॥

मृष्टिसंलावदवी कवृक्षकदवी १ माहमागदवी मविगजननी ॥

॥ १ याग गवउगी ॥ चक्रिकुलकठिवाचक मखलरुषिग

॥ ५ ॥
॥ ५ ॥
॥ ५ ॥
॥ ५ ॥

गीतबूडनवशिखमाला २ शिखचक्रिचक्रियिया रुसविधूविक गगलकगादि वं
धूविया या ॥ ॐ ॥ परसशीहूवूडाद भावूकोवा या इगनाथ शीसम्बववा
या ॥ ॥ वज्रकवाटकहा (थधविया क (धु क्रिया डखदांग २ संपूटजागि
नी कमलविहा सिंगव महामख मवि पसा द ॥ ॥ वज्रवा या हिआलि
गत सवव नाचयिवरुविरुवरुंग २ वाकृत्रिकोवयिया कीठकि रुवव
अर्धरु वसु वन पसा द ॥ ॥ सरुजस वृहिवयिया गाव नि कशु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

श्री हनुमन् वन्द्य पसाद २ पद्म आलिंगन कीदति हनुमन् विलासयिष्य
न्यक वल्गु ॥ ॥ ॐ ॥ १ प्रागुक्तलिङ्गाजय जय वाङ्मय सय
वसुधा स्वामी २ अख यदख यमंदा वनि ॥ ६ ॥ वल मूनं अन्नदा २
हूँ हूँ कावना वयि मावनि ववा वलि ॥ ॥ जिन पत्र या निदहा पत्र
व २ जिन ऊन निरूप वज्र आगिनी ॥ ॥ जय जय श्री द. राम ॥ ॥
नथीय २ श्री वन्दु नव मित्र माया ॥ ॥ जय जय हा जय वल सुह

॥ सा २ कत्रगिकपात्र खर्वांगधारी ॥

॥ जयजयं वा खर्वांग ॥

गकसंसात्र २ पुढा मा मि अद्वय वाक्करी ॥

वा ॥ ॐ ॥ वा

१ वागदंसात्र ॥ माया जाल विंशु सहस्रगरीत्रा २ माह मानदर्पकादि

त्र नित्र आसा ॥

॥

॥ एतंसात्र असा वा २ वागदंष माह कादि त्रः

नित्र आसा ॥

॥ अन मि खन यन दृढ कत्र विय २ उन्म सवीचि

॥ इष्टत्र पुन्यद ॥

॥ सहज संसावनय उदना गगधत्रिया २

नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ अत्र धृष्टा उदयत्रय पायपसा

दा १ गात्रकिनि दृष्टवपाप रुवचकगात्रिवा ॥

॥ ॐ ॥

रागागशाक्षत्ररुवरी ॥ तिरुवनकालिकमूत्रमिअनलायनविनयवति ॥

ॐ ॥ नाचयि वज्रमख पत्रमध्वन श्रीनवति ॥

॥ वडिसे स

रुसुकित्रलदशसूर्यसादसुवती ॥

॥ वक्रविहवृषविमदअ

नूवायनसखवति ॥

॥ ॐ ॥

॥ १ नागललित ॥ अनुरु

न मथ गावं काव सं गावं च न रूप चिकित्त विविश कलशं २ उं आ ४ रुं काव
 वज्राम तमदकं सर्व जिर्वजिन व्यापि तमदक कलशं ॥ ध्रु ॥ चन्द्राम
 तत्रा वाधिरुल दायकं सर्वजिन व्यापि तमदक कलशं २ जग तमल (म)
 धि तमून्यक वृक्ष इव सं साव नाशन विवक्र नूपी ॥ ॥ वज्रपत्र मा
 नमय गन्धर्व सं यक शंख सं (म) धि त पंचपीयूखं २ रुं काव तमनुपुष्टि शगव
 न्धन वज्र सं स्मृ पि त विपाक कलशं ॥ ॥ द्यु तमर्त्य तत्र सफ रूप

॥ व आशु मन्दा कि निजल रूपं २ मटि नि साधन न द व ना च कं ह्म न स
 व मा नि य द्द डी ऊ कि न र्ण ॥ पा या दि आ च मन दान पृथ पृथ सत्र सम या
 च क य व शि रं वि म ल क ल र्ण ॥ महा वा ग द वि रू य वा धि चि रु रू पं स म य स
 व ह्म न च क उ की र्ण ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ १ वा ग रू वी ॥ ग उ
 जि न ड र्ण हा थ ध रि या क म ल क ल रि ष अ ग वा रि २ उ म व क न रि क ना
 व रि षू ला वा म र व र्ण ग क पा ल ध वा ॥ ॥ ॥ श्री स म्ब व वा या वा क्क रि

ॐ शुक्रं जंगुलिना १ मात्र विप्रचापयि यात्र माया सा सखन्दु मृदा सिद्धिदा ॥
॥ पाशो वृक्ष मण्डल वामहाथ ध्वविद्या डनत्र मित्रमात्रा २ नीच
रुचिगलाहिग कनकारुचडमुख अकि विकलाल धवा ॥ ॥ अग्नि
रुपदओ रं वव चापयि याल कालि त्रा वि दिन मृदा २ विश्व कूलिग अर्ध
वन्द ऊपशक वायवर्म मण्डल ॥ ॥ कृति मंवी ववी वध्वनाय
कमिनि चर्क महावी ववी २ कदली गाय ववी ववी वध्वन ऊं ऊयि सयत्र मं

वधवा ॥

॥ २०५ ॥

॥ वागर्हत्रवि ॥ अष्टकृष्णपात्र, दिगविस्

दिगुवन, धंशीय मात्रचतुश्श (ग १ गगलशखत्रगगनवत्तमनका वा ग

गलदा मात्र वज्रघृवाजियात्र ॥

॥

॥ ईं ईं न मामिपचक जकि

नीपंचशगति ह्यानजकिनी सत्रलश (गगा ॥

॥ पूर्वदलुत्रप

श्चिमदकिलचतुश्चवन, विश्वमात्रविश्वखंदियात्र १ जकिनी दीपिनीचद

सिकवाजनी धाववगाव संशासवदनी ॥

॥ सिंधिनिव्याधि

विषय

नीजं वृकडला किनी खदांग पत्र गुर्गुग दला १ वरु जा किनी धात्र व
तात्र जा किनी च अल जा किनी च उत्र दंवी ॥ ॥ जिन जन नि
दवी जा किनी दुर्ग पाय गत्र दम धं च मूदा रुत्र द विरु पिता १ ख उंग दं ठ
क व ऊर्घ थ खदांग पात्र पत्र मध्वरी ह्यान दंवी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
१ राग ललिता ॥ विषय विषय विरु पवन सजा (ग जात्र यि द नु दि ना रि
क सत्र १ द रु यि जिन विरु ग मि मत्र यि स्र ग जिन नि नि आ सा स म य धम

सयनी ॥ ॐ ॥ नमो नमो ध्यायः कालवक्रः हवः समस्त विस्ववर्षः
२ पयिपदमसंजा (गमंरुवनिमक न सह जान आ नन्य मयज्ञानवर्ष ॥
॥ वक्रपथ्यक्षमनक क्षमावृत्ति गन नामसंगीति अक्षायध्वानं १ ज
गत्तु ४ खनामनं वाधिरुलदायकं आगज नम मावृत्ताव विनी ॥
गुन वाक्चदृधप्रिया अर्धपवनक विन्य मलिमकू चन्द्र उगा जीधप्रिया
१ चदृधकपा नम त्रिन पत्र मंभव सूर्यरुवन खत्रवात्रा हवनी ॥ ६

॥ स्वप्नमायासदृशतावपि तावता, ब्रह्मधर्मसंघशत्रुतागमिष्या २ गु
 वृचत्रयशिशुध्विया, गावन्ति सूत्रावज, जन्मजन्ममात्र, ब्रह्मशत्रुतां ॥
 ॥ १ ॥ राग, ललिता, जूयपचन, श्रीमश्रुकुमात्रा २ शशध्वत्र कित्रुतासंका
 शदहा ॥ ॥ २ ॥ दवश्रीमश्रुधाषंरुवनवापिना २ नीरुखभदहिनक
 वधायीना ॥ ॥ ३ ॥ वामपूरुकध्वत्र, सूत्रगुत्रवाया २ पप्रपकाशकासदहा
 ॥ ॥ ४ ॥ दहिनवामकवधनू शत्रुध्वत्रिश्चुत्रमात्रदर्पवानपुलाव ॥ ६

॥ मंजुनाथ ॥

नमो वदन

॥ ॐ नमो नमो पात्र नाथ प्रमृदिगद्गदया १ अस्मिन्मकरुलवप्रसादा ॥

॥ ॐ ॥ नागकनदि ॥ श्रीमंजुनाथवचमहास्त्रिनविजया १ चन्द्रहासखञ्जध्वनिना

गवासऊदस्तु ॥

॥ नमामि १ श्रीमंजुनाथ १ जगदीश्वर जगत्पुत्र

स्ववन्ध्यापिना ॥

॥ पूरकध्वनीगुरु पत्रमगुवनाया १ श्रीधर्मध्वनस्तु न

नमालमं तुललक्षणा ॥

॥ जगन्नाथ जगन्निबन्धननाया १ सर्वभूत

विन्द पण्डितनिबन्धना ॥

॥ ॐ ॥ नागमन्त्राद ॥ नमो वदन ॥

कमलविकाराणि

वत्समकूटआलंकारा २ चतुर्दशरात्रपूरकसत्रधनधात्रि॥ १ ॥ न
सामि मंडरी पद्मनखधवा २ सयत्रआसापत्रिपूत्रिग ३ ध्वनिगा॥
दहिनशी गतापनि वामशी महाकात्रा २ सगता मधुलमाप्य पक्षलिगस्थिता॥ ४
॥ मधुसिंहारात्राया विष्वविद्यापिगा २ अक्षराय वरुवाधि इतिगद्व
ना॥ ॥ वज्रधनपसादीय दासरात्रयिया २ गुत्रचवतामात्रसिद्धि
त्रयपसादा॥ ॥ ॥ रागनिववद ॥ कमलविकाराणि
॥ ममदप्रियवदनममदेहा २ चतुत्रवदन सुवल्लयदत्र पद्मनखपकाशि

॥ नमामि शशी महासंज्ञी सकलगुणनायकसुवृक्षकमति
दहनरूपानववपुदः सर्वरूपान निधियात्रिणा ॥ पथमकवद य
वज्रयक्षधनमदाजालिगल विनाजिना २ द्वितीयं कर्मधनरुणीयज्ञान
पुरुषकचतुर्थवर्गसर्ववधना ॥ इत्युक्तपाशुवनधर्मवा
पचतुर्थवामधनपुरुषका २ बलमकृष्णपुरुषलिता किंविषकर्मधन
वीवना ॥ निर्वृद्धिवृद्धिहायित्री मित्रसागिना सर्वरूपानविष्

म
शु
वि
प

यसागना १ नद्रुसवन सवनागत पत्रमानन्यवज्जन्मन ॥

॥ ३३ ॥

॥ वागवर्षगा मधुविपूषिपूवा इयनिद्रुवावा १ सकलदववन्दिगपादी ॥

॥ ॥ मेगीआदिवृक्षी मश्रुकूमावा १ त्वंजुविवन्दिगपमनरत्य

स्वयं ॥ ॥ कूंकूमवृचिवां स्रवचिंनविषमा १ मूण्यागकीत्रकवृक्ष

विहवां ॥ ॥ विषयविषमकूवपात्रंगमनस १ विम्यविवापिग

मीयं गुवृस्वयंरु ॥ ॥ मकगुव पत्रमादि विन्दूआवा १ गमर्वा

नमामि१ जिन धर्मो ॐ ७

किं न वगीन पदाव कूलिम् ॥ ॥ ३३ ॥ १ नमामि १
जिन धर्मो धातु स्वयं २ गिरु वन अनुरुध धर्मो धातु वागी ध्वज ॥ ॐ
॥ नमामि १ जिन पंच जिन न भालु १ दशरुमि द्वा गिंश गम हासु खत्राया
॥ ॥ स्वर्ग मध पातात्र रुव न श्री कापा गत्र १ नुच डत्र न ग मि म
हासु न्यायाया ॥ धर्म श्री मि १ ज्ञान श्री मि १ दहि न रुकु ख ज्ञान धर्म
॥ श्री ला क धर्म म धुल म हासु खत्राया १ नमो धि य ऊ पी न व

नमस्तदेवा ॥ श्रीवकाचार्यश्रीवन्द्यदरुजाचार्य१रुनचि श्री
 वाक्कवकचवाचविता ॥ ॥ ॐ ॥ १नागरुववि ॥ नमामि२
 जिन ॐ कवन्दकचकुनमूनिआलिनीता १पंचरुनपंचक्षरुन
 पावृद्धधर्मआलयस्वरा ॥ ॥ ॐ ॥ १नारु१नारु१नारु१नारु१ १ऊगा न
 संसात्रडवात्रिया मनाहात्र नमास्तु १पंचजिनस्वरा १पंचरुनपंचक्षरु
 हारुपावृद्धधर्मआलयस्वरा ॥ ॥ नमामि२ श्रीमानिपत्रस्वरा

अखयनिर्वंजन

सद्विशिष्टवद्वयनिकं १ इति गरुवन सर्वपापकुर्यं कत्र दानपूष्यज
रुभाक्षपदा ॥ ॥ नमामि १ धर्मधरा वागीश्वर पाठशइवा
त्रयत्रिमूर्तिना १ पाठश गात्रल मूनमूनकावा सर्वदवपत्रिसंस्ति ना ॥
॥ नमामि १ वागीश्वर मलुल पद्मगिनिनि वाशिना १ सत्ववि
माहिना १ खविना १ न पलमा मिडितचक्रधरा ॥ ॥ ॐ ॥
१ वागनिर्वंद ॥ अखयनिर्वंजन अखयजून पद्मगगन कमलजसाध

ना २ १२ न्याता विवाहित नाय १ चिन्तादव पात विंद स मजा ठि ना॥

॥ नमासि निवात्रं रती वा क्रव ख ताव हं तु रू व ल स पा पि ना २ स व द च नु स

म गे उप का गि ग ज ल ज च नु स म वा पि ना॥

॥ आ न न्द प त्र मा न न्द वि

त्र मा स रु जा च तु वा न न्द ज स र वा २ प त्र मा वि त्र मा स न क्का दि त्र म हा स र व

स र ग न स प द पा पि ना॥

॥ प र्ठ ग आ ग व त्र मा धि त्र च क व र्ति म व म

२ नि म्म ल ह द या च क धा पि त अ हि नि सि क्क च न ज नु म य

साधना॥ ॥ हवक, कालचक्र, गीतक, समुद्र, अन्नक, कादि, सिद्धाया
वंगक २, गीतक, आदियानपू, गुणिविज्ञात्रं भवती, परमहासुखजानकं॥ ०

नमः श्रीवृगमलाकेश्वरदत्त १ नमामि १ श्रीनन्ददत्त स्वर्गमध्यामात्र
दत्ता ॥ दशरुमिद्वारिभक्तलक्ष्मीदाया जगन्नाथ अरुणदा

गा १ श्रीअमिताभमित्रांगकधविद्या, श्रीलाकेश्वरवरावर्धगति ॥

ॐ ॥ वागललिङ्गं कुरु ॥ उर्वरासुवर्णश्रीविभक्तनृस्य १ ॐ

नीलशक्तिपिंगलकेश ॥ ॐ ॥ जगदन्कपक्रियाशुद्धद्वी १

इष्टमात्रविद्युन्नाशनीद्वी ॥ ॥ वक्रनयनचिनिबुधवमात्रा १

खर्जूरमिश्रकपालनीलायत्रा॥

षष्ठं वादनं समाप्तम् ॥

१ रुतयिञ्जमाद्यवङ्गचचिगगीता॥

ॐ गं व मा व सी ॥ व ऊ आ गि नी ह वू ड वा या २ शि र व न ना थ द हि म षा (७)

॥ ॐ ॥ पीवयिषमहावसमहासूखरुविद्याश्वरुद्वीरुनि या

अनुरुवशा न॥

॥ दुर्धनात्री त्रिदलकमलसंयोगाद्दहिवि

॥ वाद्यवम्भवम्भपत्न्यालीदा ॥

॥ चवदासवनशी डय मावली मागा

॥ ॐ ॥ ॥ श्या गङ्गा

ॐ
ॐ
ॐ

नामयि पवनमं गदयि॥

वीज वाचूली॥

वसमूडा॥

वृ२ ईदा आलिंगल यागधवू॥

नाममं हूं हूं हूं॥

दहधवू॥

॥ ईजयि वपं वमहास ख २ पंचगियस

॥ गगयु वपसा दं चतुर्थ शिषक २ पालयव्री सीसा

॥ ॐ ॥ २ वागनामकवि॥ हूं हूं दहधवू सीसाव ग

॥ हवज उक्तना हूं हूं हूं २ ग

॥ सवनववन्दिग चवतववू २ कसमविलपनः

॥ शवविमकूट विरामगुल कूटायि २ नमः हूं नमः

ह्रीं श्रीं ह्रस्वजुः शुभं गुणं पश्यति॥

॥ ॐ ॥ वागधनाशी॥

सखा कामा महासख ददिय्या, वड आनन्द दद धनुः १ तिरुवनसुवयि

महासखनाया, वन्द्य सूर्यशयिभवि॥ ॥ नपापत्रिना न पून वि

ना तिरुवन एकमरुपी १ सर्वविकल्पविध्वंसनी दद्वी, अनुरुवस्तनववड

दायनी॥ ॥ अन्तिगारु भिर्यागत धत्रीया, कल्यानत्र मित्रवृषधनुः १

कवलिखर्पत्रखदांगधत्री, परास्तनववदायनी॥ ॥ दिग्विनामकूट

कर्मो वडिर्क दलकठि धत्री २ मखत्ररु विगल्लाचक (आरा) गी वरूडनवमि
 वमाला ॥ ॥ सर्वगथा गगननी विवाहि न शावज्जरा वा २ गी व
 ऊआ गिनी मित्रगम ध्रिय्या गावन्ति ममत्रमवजा ॥ ॥ ६०३ ॥
 रमागवमक ॥ ॥ जिनवत्रजन निपराखवमनि २ विवाय यिममत्रमं दंदा आ
 लिंगा ॥ ॥ निर्वसूहस्रवय ४१ गात्रसंपूर्ण २ गा-आलिंग
 न आनन्दनयन ॥ ॥ चापयि संशागमयवधी मयन २ वागवित्रा

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

गङ्गायि मा भ्य निषर्तु ॥

प्रप मुख दंदा आलिंगना ॥

षट्मासि ह्यनन्तरी आलिंगना ॥

अतस्त्रिंशत्सूक्तं दत्तं पञ्चाशत् ॥ विविधित्वं तन्मन्त्रि मन्त्रकृद्विरुषि ना ॥

॥ ॐ ॥ नावयिष्ये अथ अचववीवा १ तना वयि आनन्द विनामयि

अचवना ॥ ॥ यामदहव विम्व मूढा दर्शना १ पञ्चा आलिंगना ॥

॥ अङ्गुलिगङ्गा विम्वना १ सूत्रन

॥ दहदिह सुवन् श्री यागम्वना १

॥ ॐ ॥ याग वसन्त ॥

पंचकपा

अथ महामहः॥
गुरुर्गतिपाशः॥

॥ विवागवत्तु इति रुचर्यकवा १ तस्य निरुतवः
॥ मावत्तु वदप्यनिखिलविप्रहृता २ वविभक्ति

शगनगगगतविलासयि अचला॥

॥ ॐ ॥ १ वागमादि ॥

पंचकपालाध्वनिमोत्रा पंचरुतनपंचमूडा रुचः १ न वमित्रमाला गीवला
रा व्याप चर्मकलिरुषिगत्रमना ॥ ६ ॥ ॥ ॐ ॐ ॐ कावसंजातवदना २ पर्व
लम्बादव नीत्रसमदहा काध्विपणी महाकाला १ पंचामृतवसुदप्यनरुतयि

आशायनवक्त्रकपात्रधरा॥

॥ वक्रसमाना नितिनयना धात्ररुचं क

शीषमवदना १ उर्वरकलिना, पिंगलकेशा, उन्नरुक्ष्मा, कद्वलमया॥ ६

॥ कवतिकपात्रा, धात्रिखर्वांगनागरुच्यनागकुण्डलरात्रा १ नागप्रितमिह

दात्रीपूत्रनागम, अष्टनागमरुच्यसूरमरा॥

॥ जिनवत्रमोत्रीध

विषमगावृक्षमसनसा, वक्रकवीवा १ पंगारुहा, गान्धवरावा, साखनकुलि

मा, अनुरुच्यवरा॥

॥ ॐ ॥ ॥ नागधनायी॥ गजमुखजि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

अनन्यान्वदवदवन् नृणां धिपति गणेश्वरा १ मनिमूक वत्तामवत्ता
नृत्तिकिवनसंकाशा ॥ ६२ ॥ मात्रिया विश्व, मात्रियादर्प, मात्रिया इ
खविनाम नं १ मात्रिया माया, मावसंकाशा, मवत्तपप्रइखनाशिता ॥
पेवशुवानाकूमवजस्वमरिषिपावदहिनकना १ मृगवधनखर्वा (ग, घ, ष, ष
कवतिकवाभ ॥ ॥ विविजवस्तु कंचकतिवसा, जटाशकूमलिमल्लिगा
१ लंवादनधृगलम्बादव (भा, रा, पा, य, व, मि, वि, मि, वि, वा, ऊ, णं ॥ ॥ व

सर्वज्ञाय नमः

नामवधुगवत्तदालिना मुखिका मुखम्भितिसुन्दर्यादीनादत्वा, तमसुखः
दाना, नमोऽस्तु नमोऽस्तु गच्छधिपति ॥ ॥ ३३३ ॥ गगनरेववी

पूर्ववक्ता यन्त्री हंसमानवृद्धा, कनकवर्ण अक्रूरधारी २ डहचमा हंसधारी च
प्रवासान् चन्द्रधरवर्ण शिगूलहस्त ॥ ६२ ॥ ॥ हंस अष्टगाममान नि

प्रवाचसहिताः अष्टशतव गणप्रतिशक्तिता २ अष्टशब्दिजुमवभादपदाना
सुमवकंप्राप्रशयकवली ॥ ॥ प्रश्निमन्त्र्यायनी हस्तिवादानकई

समस्तवक्त्ररूपं २ दक्षिणवात्रादि घनघात्रमूर्ति अंक्रमसहिगक्रयिषास
ना ॥ ॥ वहीमनर्वीरिकादेवी धूमवक्त्रकर्तिदंष्ट्रवर्णालि उमवृसहि
गा २ अमृदिमका मात्रि, मयूरवाहन, वक्रलाक्रावर्तु मकिधारी ॥
नेसखविष्टु, गवृधवाहन, गदावक्रसहिता, मयूरधारी २ वायव्यवाम, अ
धवी, कंकाववदना, सिंहवाहन, खगधारी ॥ ॥ अष्टकूलनाग, म
घनिम्यादिता, कंठपालनव, इगदिवी २ पलमासिदवी, श्रीआवाधियाव, रुकि

रक्तवर्ण
कोमल

मण्डितस्य सिद्धि कवञ्ज ॥

॥ ॐ ॥

॥ स्वाग गन्धर्व वी ॥ न

कवर्ण एक मुख दिव्य कवर्ण नर्त १५ हिन रुज गज रुक्म महावीर वन

॥ ॐ ॥ नमानि १ श्री सीम सन पव मध्व १ वा मरुज अशय मूडा धन

पत्नी दा ॥

॥ जगत्संसार लारु ल पसाद सिद्धि त्वं १ जगत् स

भावो द्वा सिद्धि रुल दहिमा ॥

॥ पंचपाद वसहिर्न इष्यती सन्द्री

१ नृप नारु पूर्ण नाय स मव स मना ॥

॥ मण्डित वच वल वन पसाद

॥ देवमशुशावाशावचवराणी मवाउंनमासि ॥

॥ यममालगि विस्मिन्धी

वआरुवाचार्य १ अम न परादव विवचिन्धी सी संगीक ॥

॥ ॐ ॥

॥ वाग माल ॥ निज रु ॥ अ ॥ धूव हं व ॥ अ ॥ वा या १ ॥ सी रुत गमन था गिनी पयि सं ॥

॥ धू ॥ आनन्दादिदं वा कलि आनन्दादि दवा १ पविनात्रक्ति हं व ॥ अ ॥ मनसा सं

पूर्व ॥

॥ पूर्व सिग हिरुखा निज रुल हं व ॥ अ ॥ मवत्रिअनदा पिव

यि सं भाष ॥

॥ श्री आदि यान आत्रयिच ॥ लि १ गीत अ न का कि वक्ति

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

वाऊकं॥

॥आलिकालिदयि पादध्वनकं २ कीउक्ति कामल कूलिग

वाऊकं॥

॥पयि सयि दामिनि अदय संथा (ग २ उचउ आगिनी ३

संगलगीगा॥

॥यस्म विद्याविश्वी वना वि २ वपन चउ स म हव ३

यीया॥

॥

ॐ

॥१ वाग गन्धान रेव वि॥ जिदवपम गुफ म गु ल

महासुखक विद्या २ दवी वरु विवा सिनी गत्व हान चक॥

॥पि

नयि व महा वम (गा वू दहन १ स्वर्ग भाक मार्ग सत्व उच्चा वनार्थ॥

वज्रवात्राहि अथ तत्र समय १ किं वन दवा सत्र नत्र दवी ॥ ॥

जा प्रथ गुकारिषक १ अनुरुत्र क्रिया समुच्चय ॥ ॥ गुत्र पसाद न

इर्गतिना मन १ रुनयि कूल दल आचार्य च विना ॥ ॥ ॥ ॥

राग नाटा क अनुरूप लाक मय क अनुरूप वृद्ध १ अखय निवृत्त न स यात्र विमु

क्त ॥ ॥ नाच यि अवध अकानकमान १ खर्चा गउ मत्र शीघ्र नत्र मित्र

माला ॥ ॥ अक सप्त निवृत्त न अकूल विह ना १ अनुरुत्र धनग

प्रकृतम्

मिस्रयात्रविशुद्धि॥

॥ कुरुवात्ररुद्रवज्रकुरुवात्रविना २ अ॥

वधुआकाङ्कगमिस्रयात्रनयन्य॥

॥ हलकुरुलकुरुहमरुमंत्रसूक्तं

यं श्रुतिनिष्ठवननाथचक्रसंवत्त्रयाया॥

॥ ॐ ॥ वागनाट॥

सकत्रजगत्तुवसम्भववीना २ अनूपमकत्रलकविगमस्वचिह्ना॥

॥ सम्वत्सम्वत्कुरुमयिगापं २ विविधिविकल्पविनाशनयूगा॥

दवीवावाहिदुक्तामलितदहा २ रुवुरुयवचनविभाचविलिषा॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

सकलविघ्नहन्ति सतिपतिवृग्म १ प्रपतिस्वर्गनिवाशनवृद्धा ॥ १
॥ सावासावशुगहिनवृग्म १ अनूपमसुखप्रसन्नसुखविः
ला ॥ ॥ ॐ ॥ १ यागकनदि ॥ श्रीहवजनेनात्मा दवी तिरुव
ननाथ १ पंचजिनव्यापित पंचवर्षुदहा ॥ ॥ नमामि १ श्री
पुष्पागुप्ते १ हवजगुक्थिनी वज्रगिनी भूयता ॥ ॥ पूर्व
दिगस्मिन् रवव नीववर्षु १ दहिनपाय वारी वामविंद्रधना ॥

घण्टी वीथी यागिनी दवी २ गवनि लीला वज्र कू का व संजा मा ।

॥१ वा रा का भा द ॥ प क लि ग रू का था रु व म व ति ॥ ॐ ह्रीं नी ल का स स म

दशविंशतिस्तिस्रिकवलं नक्षत्रमकूटकादाधिपः॥ य ॥ नोमिथीषव

पुवीनं रुचसिं हूत कवलं शिविनाथ शिवन व्यापित वदा विधि मन कवली ॥

॥ अमृतं ज्ञानं लिखितं, जित्स्वर्गं धीर्न सर्वं गीतं खल्वेदध्वनं श्रवणमगच्छति ॥

नीहपाशध्वंरुवात्रिणाशवन्धनकप्रलं॥ ॥ नानावत्ताहावनीपूजं॥

काटिभरवत्र लुपितददं २ दृष्टकलालं लीमसवदनं. तिरुवनवाया पवधुवीत्रं
 ॥ वीयाधिप सर्वरायहवली ॥ एतपिमावादिमा कमानस १ हवनव
 मकादि वान्दिनपादं सर्वसिद्धि माकुरुलदं ॥ ॥ २३३ ॥ नागववादि
 ॥ गतगतहाथ मा नामगुलवाया काटिहाथ मायादहा १ दकाटिहाथ माया
 आगिनीवृन्दयात्र वा लुविनकत्रदवा ॥ ॥ २३४ ॥ उंकाट मगुलला लुविः
 नात्र आगिनीवृन्दयात्र १ वज्रधामधनी क ॥ २३५ ॥ आर्लिगल वा लुसकलसः

॥ ॥

साभ्यं॥ ॥पूर्वे च कश्चिद्गुणाय दक्षिणे च तत्र विरुलियात्र शपश्चिम
पश्चिमकाशाय दक्षिणे च तत्र विरुलियात्र शपश्चिम॥

पञ्चपकामत्र दुरुवरक्षध्यात्रियात्र॥

॥ संपूट आगरुत्रां ॥

निमित्तं स्वकटधत्रियात्र २ काय वाकचिरु मधुलला सुत्रियात्र गगलकू हं
दियात्र ॥ ॥ वृषसवृषस वदगधत्रस्य र्म हंति मिलि याध र्म धातु

दियाव॥

॥ नृपस नृपस वद गन्ध वस स्य र्म ठ्ठु नि मिलि या धर्म धा रु

हायि २ कष्ट प्रा मधुस दय्य गभवय बाहिन पूजन हायि॥

二 〇

१ वा ग विहास ॥ द्विरुज एकमुख प्रक व प्रवद नश्न गन म कूट कभी निति वा

॥ नमो देवी वृक्ष हाकिनी विम्बजननी १ शिरुवन व्यापिन

जिन शानदायनी ॥

॥ दहिन कत्र वज विनासिन दग्ध १ वाम कत्रा

वज्र मात्र भृगुपीवयी ॥

॥ कत्राणि मण्डल माया उदियात्र गमना १ वल

नोपत्र वत्र गमनं पवमिना ॥

॥ श्रीविद्याध्वनी देवी सूत्रनत्र साहिता १

सकत्राणि सिद्धिदहि ममागा ॥

॥ ॐ ॥ वाग शैव वी ॥ प

मादितादि दशरुमि सुन्दरी सन मन्त्र मण्डल संलिङ्ग लयना १ द्वादशरुज च

उवदनसु (महिना वजवावाहिक (४) आलिङ्गना ॥ ३ ॥ रुँद रुँद रुँद

दिहसु (ममात्रस्यत्रसंवाधियात्र १ इदं आलिङ्गना अद्वयसंरावनात्र
यिमान्शीसन्वत्रयाया ॥ ॥ कलिगघ (४) गजवर्म शिखला कत्रति उ

मन्त्रु (महिना १ मर्जपूत्रि कपात्र खद्वा (ग) पाश पत्रसु वक्र शिवधवा ॥

॥ ॥ पंचकिन वत्रम कूट आलंशना षष्ठमूडारवण विरूपिता १ आलि

चक्र १ यि आलि ट वापयि वा घुचर्म निवासन शङ्क गन् ॥ ॥ नच

रूपायशयला गमवन्नि पत्रमादिवजगीता ॥



लत्राया॥ ॐ ॥ गङ्गाकावहमयजगत्निवासियात्र॥ ५ ॥ अमि

यजूमि यतिवर्जनाया २ सहजसुन्दरीया जिनद्रवपयिशा ५ ॥

नवद आशिनी एलमल २ वरुवावाहिआलिगलकाय ॥ प ॥ ७५

हरनाथकवलकदही २ जयजय श्रीगणेशमीनाक्षुवात्रि॥ ६ ॥



अमीता
रत्नसंभव



अक्षय



वज्रलोचन
वज्रलोचन



अमिताभ
अमीताभ



अमोघोद्योत
अमोघोद्योत





























